R.N.I. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2018-20

मूल्य-4 रुपये, वर्ष-19, अङ्क-10 अक्टूबर 2019 1

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ (उ०प्र०) का
मासिक मुख समाचार पत्र

मङ्गलायतन

तीर्थधाम मङ्गलायतन में विराजित भगवान श्री महावीरस्वामी

तीर्थधाम मङ्गलायतन में दशलक्षण पर्व की झलकियाँ

मङ्गलायतन

③

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ (उ.प्र.) का

मासिक मुखपत्र

वर्ष-19, अङ्क-10 (वी.नि.सं. 2545; वि.सं. 2075) अक्टूबर 2019

आओ नी आओ नी भविजन...

आओ नी आओ नी भविजन... आओ नी आओ नी भविजन
सिद्धक्षेत्र के तले, सिद्धप्रभु से मिलें... निज अनुभव रस पान करें।
आओ नी आओ नी भविजन ।टेक ॥

पावापुर की पावन वसुधा से... 2
मंगल आमन्त्रण आया... 2
सिद्धों के संग मिल जाने को...2 भव्यों को है बुलवाया... 2
अष्टकर्म के बंधन छूटे.... 2 भव भव से
निज अनुभव रस पान करें... ॥1 ॥

मंगलकारी प्रभुकल्याणक.... 2
भव्यों के कल्याण स्वरूप..... 2
जिन दर्शन है उनका सच्चा...2 प्रभु सम जो देखे निज रूप...2
चिरभावी तब मोह पलाय... 2 पल भर में
निज अनुभव रस पान करें... ॥2 ॥

यदि दुख से परिमुक्ति चाहो... 2
तो श्रामण्य स्वीकार करों... 2
इन्द्रिय सुख तो सदा दुखमय... 2 अब इनका परिहार करो... 2
भव सागर से पार चलो अब... 2 क्षण भर में
निज अनुभव रस पान करें.... ॥3 ॥

साभार : मङ्गल भक्ति सुमन

संस्थापक सम्पादक
स्व. पण्डित कैलाशचन्द्र जैन, अलीगढ़
मुख्य सलाहकार
श्री बिजेन्द्रकुमार जैन, अलीगढ़
सम्पादक
डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, मङ्गलायतन
सह सम्पादक
पण्डित सुधीर जैन शास्त्री, मङ्गलायतन
सम्पादक मण्डल
ब्रह्मचारी पण्डित ब्रजलाल शाह, वढ़वाण
बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़
डॉ. राकेश जैन शास्त्री, नागपुर
श्रीमती बीना जैन, देहरादून
सम्पादकीय सलाहकार
पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, जयपुर
पण्डित विमलदादा झाँझरी, उज्जैन
श्री चिरंजीलाल जैन, भावनगर
श्री प्रवीणचन्द्र पी. वोरा, देवलाली
श्री वसन्तभाई एम. दोशी, मुम्बई
श्री श्रेयस् पी. राजा, नैरोबी
श्री विजेन वी. शाह, लन्दन
मार्गदर्शन
डॉ. किरीटभाई गोसलिया, अमेरिका
पण्डित अशोक लुहाड़िया, अलीगढ़

इस अङ्क के प्रकाशन में सहयोग-
श्री अंश जैन
सुपुत्र
श्री अमितचतरसेन जैन
C/o. **श्री सी. एस. जैन,**
88 टैगोर विला, टैगोर कॉलोनी,
देहरादून - 248001
(उत्तरांचल)

क्या - कहाँ

अनन्त चैतन्य दीपक से...	**5**
प्रथम प्रवचन	**8**
सदाचार का प्रभाव	**17**
वीतरागी-विज्ञान में ज्ञात होता	**20**
नवतत्त्व का ज्ञान....	**22**
मोक्षतत्त्व का साधन (4)	**24**
आचार्यदेव परिचय शृंखला	**27**
समाचार-सार	**29**

शुल्क :
वार्षिक : 50.00 रुपये
एक प्रति : 04.00 रुपये

दीपावली एवं मङ्गल सुप्रभात प्रवचन

अनन्त चैतन्य दीपक से सुशोभित आनन्दमय सुप्रभात

आत्मा में चैतन्य दीपक प्रगटे और भगवान महावीर जिस मार्ग से निर्वाण को प्राप्त हुए, वह निर्वाण मार्ग इस आत्मा को भी प्रगट हो। इस प्रकार सच्ची दीपावली मनाने की विधि पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने इस प्रवचन में बतलायी है।

भगवान का मार्ग, अर्थात् आत्मा की मुक्ति का मार्ग; अत्यन्तरूप से अन्तर्मुख है। समस्त रागादि बाह्यभावों का उसमें सर्वथा अभाव है, आनन्दस्वरूप जो अपना परमात्मतत्त्व, उसमें जुड़कर जो उपयोग अन्तर्मुख हुआ, उसमें समस्त रागादि परभावों का अभाव है। अहो! ऐसी अन्तर्मुखपरिणति में दुःख नहीं है, भव नहीं है, द्वैत नहीं है; वह तो आनन्दरूप है, मुक्त है। आनन्दमय कारणपरमात्मा के साथ वह जुड़ी हुई है। अन्तर में आनन्द के समुद्र के तल को स्पर्श कर जो परिणति आती है, वह परिणति अत्यन्त आनन्दरूप है। उस परिणति के साथ आत्मा को एकाकाररूप से जोड़ना, वह शुद्धोपयोग भक्ति है, वह निर्वाण की भक्ति है। जिसके असंख्य प्रदेश अतीन्द्रिय आनन्द से सराबोर है, ऐसे अपने आत्मा में अत्यन्त अन्तर्मुख होने पर जो परम आनन्द परिणति प्रगट हुई, उसमें राग-द्वेष-मोहादि है ही नहीं! ऐसे आनन्द से भरपूर अन्तरतत्त्व को छोड़कर बाहर में विषय-कषायों में कौन डोला करेगा? सुख के समुद्र में से बाहर निकलकर दुःख में कौन जायेगा?

अखण्ड स्वरूप के आश्रय से प्रगट हुई परिणति भी अखण्ड है, अखण्ड आत्मस्वरूप में जो पर्याय एकाग्र हुई, वह पर्याय भी अखण्ड है। रागादि से वह खण्डित नहीं है। उसमें रागादि का अभाव है और अखण्ड तत्त्व के आनन्द का सद्भाव है, वह अजोड़दशा है, उसके साथ व्यवहार के भावों की तुलना नहीं हो सकती। उस पर्याय में तो आनन्दमय प्रभु पधारे हैं।

कारणपरमात्मरूप शुद्धद्रव्य अपनी अन्तर्मुखपरिणति में स्थिर हो गया है। उससे आगे निकलकर बाहर के परभावों में वह नहीं जाता। आहा...हा...! अपनी चैतन्यपरिणति में अपना परमात्मतत्त्व विराजमान है अपनी परिणति के साथ द्रव्य जुड़ा हुआ है, और परिणति अपने द्रव्य में जुड़ी हुई है। इस प्रकार द्रव्य-पर्याय का अद्वैत है, उनमें द्वैत नहीं है, उसमें कहीं रागादि परभाव नहीं है। चैतन्यतत्त्व में जुड़ी हुई परिणति, रागादि में किञ्चित्मात्र भी नहीं जुड़ती है। अरे! यदि चैतन्यपरिणति में चैतन्य प्रभु न आवे तो उसे चैतन्य परिणति कौन कहेगा?

जैसे सिद्ध भगवान, राग में नहीं रहते; अपने आनन्द में ही रहते हैं, उसी प्रकार साधक की अन्तर्मुखपरिणति भी रागादि परभावों में नहीं वर्तती। वह तो परमतत्त्व के आनन्द से भरपूर है। ऐसी परिणतिरूप से आत्मा परिणमित हुआ, वही सच्ची **दीपावली** है, उसमें अनन्त चैतन्य दीपक प्रगट हुए और उसे आनन्दमय सुप्रभात खिला।

अरे! संसार के प्रपञ्च में और लक्ष्मी इत्यादि के वैभव में जिसे सुख लगता है, वह जीव वहाँ से उपयोग को हटाकर अन्दर के आनन्दमय तत्त्व में उपयोग को कैसे जोड़े और मोक्ष का सुख उसे कहाँ से मिले? आहा! आत्मा स्वयं शान्तरस का महासागर, परम आनन्द से भरपूर तत्त्व, उसमें उपयोग जोड़ने पर जो आनन्ददशा प्रगट होती है, वह अजोड़ है; उसके समक्ष संसार के सभी सुख तो प्रपञ्चरूप हैं। उनमें कहीं सच्चा सुख है ही नहीं। सच्चा सुख तो अन्तर के सुख निधान में से निकलता है।

अन्तर के सुख निधान में जिसने अपने उपयोग को जोड़ा है - ऐसे सम्यग्दृष्टि योगीजन ही अपने अखण्ड अद्वैत परमानन्द का अनुभव करते हैं। वही चैतन्य के दीपक से जगमगाती **दीपावली** है।

अहा! ऐसा अपूर्व चैतन्यसुख बाह्य दृष्टिवन्त दूसरे जीवों को कहाँ से होगा? जो उपयोग को राग से पृथक् करके अन्तर में जोड़ते हैं, उन्हें ही ऐसा

अपूर्व चैतन्यसुख अनुभव में आता है। ऐसी दशा ही भव के अन्त का पन्थ है। वही महा-आनन्द का मार्ग है। ऐसी दशा से ही आत्मा में सच्ची आनन्दमय **दीपावली** मनायी जाती है।

चैतन्य की परिणति का अपने कारणपरमात्मा के साथ ही मेल खाता है, इसके अतिरिक्त दुनिया के प्रपञ्च के साथ उसका मेल नहीं है। इसलिए दुनिया के कोई अज्ञ जीव कदाचित् तेरे सत्यमार्ग की निन्दा करे तो भी तू मार्ग के प्रति परम भक्ति या उत्साह को मत छोड़ना। अहा! यही मेरे सुख का मार्ग है। ऐसे परम निशंकरूप से अन्तर में अपने मार्ग में चले जाना! ऐसा अन्दर का मार्ग बाहर के शुभाशुभ प्रपञ्च में रुके हुए जीवों को कैसे हो सकता है? दुनिया, दुनिया में रही; मेरा मार्ग तो मुझमें ही समाहित है। चैतन्य-चमत्कार की भक्ति से आत्मा मुक्ति प्राप्त करता है, वह भक्ति कैसे होती है? महाशुद्ध रत्नत्रयस्वभावी आत्मा है, उसमें अपने को सम्यक्परिणाम से स्थापित करना, वह निर्वाणभक्ति है, वह मुक्ति का कारण है। **(दीपावली एवं नूतन वर्ष पर, पूज्य गुरुदेवश्री का मङ्गल प्रवचन, आत्मधर्म, (गुजराती) अक्टूबर 1971 से)**

सहज अद्भुत शान्त मुनिदशा

मुनिराज को देह में भी उपशमरस बरसता है, शरीर भी शान्त... शान्त... शान्त। अरे! वचन में भी कहीं चपलता अथवा चञ्चलता दिखाई नहीं देती - ऐसे शान्त होते हैं। उन मुनिराज को निर्ग्रन्थ गुरु कहा जाता है। उनको देह की नग्नदशा निमित्तरूप होती ही है परन्तु वह अथवा पञ्च महाव्रत के शुभविकल्प भी चारित्र नहीं हैं, उनसे मोक्ष नहीं है; मोक्ष तो अन्दर शुद्धात्म-द्रव्यसामान्य के उग्र अवलम्बन से प्रगट होनेवाली स्वरूप स्थिरता से ही होता है। वह स्वरूप स्थिरता उस मुनिदशा में है। अन्तरङ्ग में प्रगट होनेवाली वह सहज मुनिदशा अद्भुत है। मुनिराज की मुद्रा भी शान्तरस से नितरती होती है। अहा! ऐसी बात है। *(-वचनामृत प्रवचन, भाग 4, पृष्ठ 197)*

श्री समयसार नाटक पर

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीजी का धारावाही प्रवचन

प्रथम प्रवचन

गतांक से आगे

अब कवि कहते हैं कि भगवान की भक्ति से हमें बुद्धिबल प्राप्त हुआ है:-

कबहू सुमति ह्वै कुमतिकौ विनास करै,
कबहू विमल जोति अंतर जगति है।
कबहू दया ह्वै चित्त करत दयालरूप,
कबहू सुलालसा ह्वै लोचन लगति है॥
कबहू आरती ह्वै कै प्रभु सनमुख आवै,
कबहू सुभारती ह्वै बाहरि बगति है।
धरै दसा जैसी तब करै रीति तैसी ऐसी,
हिरदै हमारै भगवंत की भगति है॥14॥

अर्थ:- हमारे हृदय में भगवान की ऐसी भक्ति है जो कभी तो सुबुद्धि-रूप होकर कुबुद्धि को हटाती है, कभी निर्मल ज्योति होकर हृदय में प्रकाश डालती है, कभी दयालु होकर चित्त को दयालु बनाती है, कभी अनुभव की पिपासारूप होकर नेत्रों को थिर करती है, कभी आरतीरूप होकर प्रभु के सन्मुख आती है, कभी सुन्दर वचनों में स्तोत्र बोलती है, जब जैसी अवस्था होती है तथा तैसी क्रिया करती है ।। 14 ।।

अब कवि कहता है कि भगवान की भक्ति से हमें बुद्धिबल प्राप्त हुआ है। देखो! यहाँ भगवान की भक्ति कहने के साथ ही आत्मा की भक्ति भी आ जाती है, परन्तु निर्मानता से ऐसा बोला जाता है कि भगवान की भक्ति से बुद्धिबल प्राप्त हुआ। तीर्थंकर परमदेव सर्वज्ञ की भक्ति से मेरी बुद्धि सम्यक् बनी है ऐसा ही कहा जाता है, परन्तु भक्ति सच्ची कब कहलाये? कि जब निज चैतन्य को पहचानकर उसकी भक्ति जगे, तब ही भगवान भक्ति व्यवहारभक्ति कही जाती है।

काव्य – 14 पर प्रवचन

हमारे हृदय में भगवान की ऐसी भक्ति है कि किसी समय तो सुबुद्धि होकर कुबुद्धि को दूर करती है। सम्यग्ज्ञान द्वारा अज्ञान का नाश होता है। स्वसन्मुख होने पर अन्दर में चैतन्य का प्रकाश होता है, सर्वज्ञ की भक्ति आने पर 'मैं भी सर्वज्ञ-स्वभावी हूँ और सर्वज्ञ होने योग्य हूँ' ऐसी चैतन्यज्योति अन्दर से जागृत होती है।

किसी समय चित्त दयालु बन जाता है अर्थात् भक्ति में कषाय की मन्दता से सभी प्राणियों के प्रति करुणा जगती है। सभी के प्रति अविरोधभाव आता है।

भगवान की भक्ति करते किसी समय अनुभव की ऐसी पिपासा हो जाती है कि आँखें स्थिर हो जाती हैं, नेत्र ठहर जाते हैं। अन्तर में ज्ञानचक्षु द्वारा सर्वज्ञ-भगवान को देखने से ज्ञानचक्षु स्वभाव में स्थिर हो जाते हैं। अहो! भगवान सर्वज्ञ हैं, वैसा ही मैं भी सर्वज्ञस्वभावी हूँ।

ये तो अध्यात्म कवि हैं और अध्यात्म के ग्रन्थ का अर्थ होता है, इसके अन्दर में से अध्यात्म ही निकलता है। आगे आयेगा कि "शुद्धता विचारे, ध्यावे, शुद्धता में केलि करें अमृतधारा वरसे.." शुभपरिणाम दया-दानादि का राग तो कषाय है। शुद्ध चैतन्यस्वरूप आत्मा उससे रहित है।

प्रवचनसार में आता है न, जो कोई अरिहन्त भगवान के द्रव्य को, उनकी शक्ति-गुण को और दशा-पर्याय को जानता है, वह अपने अन्तर में जाकर मोह का क्षय करता है। सर्वज्ञस्वभाव की दृष्टि होने पर राग से एकता टूट जाती है, फिर बाहर में जितना विकल्प रहता है, उसमें मन्दकषाय होती है और अशुभराग टलता है।

कबहूँ आरती व्हैं के प्रभु सन्मुख आवै – इसके भी दो अर्थ होते हैं। अन्तर में प्रभु सन्मुख आरती अर्थात् प्रेम होने पर प्रभु सन्मुख गति जाती है और बाहर में भगवान के सन्मुख आरती उतारने का विकल्प आता है। पहले के जमाने में जब राजा बाहर गाँव से आता था तो वहाँ उसकी आरती उतारते

थे। उसके पीछे भाव यह है कि हम तुम पर न्यौछावर होते हैं; परन्तु उस नाशवान पद पर क्या न्यौछावर होना? अविनाशी चैतन्यप्रभु का राज स्वीकार कर उस पर न्यौछावर हो तो अन्तर में शान्ति और वीतरागता की जागृति होवे, उसका नाम प्रभु के सन्मुख आरती करना कहा जाता है।

लोग गीनी (दीपक) आदि ऊँची वस्तु से भगवान की आरती उतारते हैं न! यहाँ ऊँची चीज सम्यग्दर्शन-ज्ञान से भगवान आत्मा की आरती उतारते हैं अर्थात् दृष्टि भी प्रभु के सन्मुख स्थिर होती है और लीनता भी वहाँ ही होती है और बाहर में प्रभु भगवान जिनेन्द्र के प्रति लक्ष्य जानेपर अन्य सब लक्ष्य छूट जाता है।

किसी समय तीर्थंकर त्रिलोकीनाथ की सुन्दर वचनों द्वारा स्तुति करता है। गणधरदेव भी प्रभु की स्तुति करते हैं और इन्द्र भी एक हजार आठ नामों से भगवान की स्तुति करता है, अन्य सामान्य सन्त आदि भी भगवान की स्तुति करते हैं।

बनारसीदासजी ने भी सुन्दर स्तुति रची है। बनारसीदासजी गृहस्थावस्था में थे, परन्तु वे जबरदस्त कवि और ज्ञानी हो गये हैं। संसार से उनकी दृष्टि उड़ गई थी। आसक्तिजन्य भाव हो उसे भी ज्ञानी उपाधि जानकर त्यागना चाहते हैं।

बाहर में भक्ति का भाव जगे, तब प्रभु की भक्ति करते हैं और अन्दर में भक्ति जगे, तब अन्तर में ठहर जाते हैं। इस प्रकार जब जैसे भाव जगें, तदनुसार क्रिया करते हैं।

हिरदै हमारै भगवंत की भगति है -जिन्होंने एक समय में तीनों कालों को ज्ञान में ले लिया है उन भगवान के ज्ञान की महिमा कितनी? कितना विशाल ज्ञान? ऐसे अनन्त गुण के धनी भगवान की भक्ति हमारे हृदय में बसती है।

श्रीमद् में आता है कि 'सर्वज्ञ देव परम गुरु' की माला फेरनी। एक माला में दोनों को समाहित कर दिया है। जिसको सर्वज्ञ शक्ति की दिव्यता

प्रकटी है, वे ही परमगुरु है – ऐसा जिसे अन्तर में भान हुआ है, उसको आत्मा की सन्मुखता होती है और शान्ति मिलती है।

अब नाटक समयसार की महिमा का वर्णन करते हैं:–

मोख चलिवेकौ सौन करमकौ करै बौन,
जाके रस–भौन बुध लौन ज्यौं घुलत है।
गुन को गरन्थ निरगुनकौ सुगम पंथ,
जाकौ जसु कहत सुरेश अकुलत है॥
याहीके जु पच्छी ते उड़त ग्यानगगनमैं,
याहीके विपच्छी जगजाल मैं रुलत है।
हाटकसौ विमल विराटकसौ विसतार,
नाटक सुनत हिये फाटक खुलत है॥15॥

अर्थ:– यह नाटक मोक्ष को चलने के लिये सीढ़ी स्वरूप है, कर्मरूपी विकार का वमन करता हैं, इसके रसरूप जल में विद्वान लोग नमक के समान लीन हो जाते हैं, यह सम्यग्दर्शनादि गुणों का पिण्ड है, मुक्ति का सरल रास्ता है, इसकी महिमा वर्णन करते हुए इन्द्र भी लज्जित होते हैं, जिन्हें इस ग्रन्थ की पक्षरूप पंख प्राप्त हैं, वे ज्ञानरूपी आकाश में विहार करते हैं और जिसको इस ग्रन्थ की पक्षरूप पंख प्राप्त नहीं है, वह जगत के जंजाल में फँसता है, यह ग्रन्थ शुद्ध सुवर्ण के समान निर्मल है, विष्णु के विराटरूप के सदृश विस्तृत है, इस ग्रन्थ के सुनने से हृदय के कपाट खुल जाते हैं ।।15।।

काव्य – 15 पर प्रवचन

अब कवि नाटक समयसार की महिमा का वर्णन करते हैं कि यह शास्त्र तो मोक्ष में जाने के लिए शकुन है।

यह समयसार शास्त्र भरतक्षेत्र के भक्तों को भगवान का विरह भुलाने वाला शास्त्र है। मोक्षगमन के लिए प्रथम शकुन है कि तुमको समयसार का पक्ष आया तो अब तुम्हारा मोक्ष तैयार है। द्रव्य और भाव समयसार अलौकिक है। मोक्ष में जाने के लिए सीढ़ी है। यह सीधी केवली की ही

आई वाणी है। यह समयसार जिसको सुनने मिला, उसको मोक्ष जाने के लिए शकुन हो गया।

यह समयसार विकार का वमन करानेवाला है, कर्म का नाश करानेवाला है। ऐसा अलौकिक शास्त्र है कि उसका वाच्य आत्मा जिसके लक्ष्य में आया, उसको मोक्ष का शकुन हो गया और मोक्ष चढ़ने की सीढ़ी पूर्णानन्द प्राप्ति की श्रेणी मिल गई। जिसको भाव में यह समयसार प्राप्त हुआ है, उसको अतीन्द्रिय आनन्द का वेदन होता है और विकार का तो वमन हो जाता है। वमन का अर्थ यह है कि जो वमन कर दिया, उसे फिर से कोई खा नहीं लेता; वैसे ही जो विकार का वमन कर दिया, उसे फिर से ग्रहण नहीं करता –ऐसा अर्थ इसमें से निकलता है। अहा हा हा.. !

अहा.. ! जिसको चैतन्य स्वरूप पूर्णानन्द के रत्नाकर का श्रवण मिला, और श्रवण करके आत्मा के सन्मुख दृष्टि करके, रुचि की उसने कर्म के विकार का तो वमन कर दिया और अतीन्द्रिय आनन्द की श्रेणी में चढ़ने लगा। किसी को ऐसा प्रश्न हो कि यह पंचम काल है, इसमें मोक्ष के लिए क्या हो सकता है ? क्या उपाय ? तो कहते हैं कि यह समयसार मिला अर्थात् उसके मोक्ष का शकुन हो गया और उसकी श्रेणी में चलने भी लगा।

समयसार की एक–एक गाथा और टीका में अहा ! सत् के रहस्य भरे हैं, अमृत के घूँट भरे हैं। उसके रस में जैसे पानी में नमक घुल जाता है, वैसे समयसार के रस में विद्वान एकाकार हो जाते हैं। यह अध्यात्म के कवि भी संक्षेप में, कम उपमा देकर भी कितना अधिक समझा देते हैं। जैसे पानी में नमक घुल जाता है, एकमेक हो जाता है; वैसे ही ज्ञानी की आनन्ददशा आत्मा में एकमेक हो जाती है। बुध अर्थात् समयसार के वास्तविक तत्त्व को समझनेवाली ज्ञान की वर्तमान दशा अन्तर में लीन हो जाती है, तब ही उसे समयसार मिला कहा जाता है।

समयसार गुन का गरन्थ है– समयसार यानी आत्मा अनन्त गुणों का भण्डार है। सम्यग्दर्शनादि गुणों का पिण्ड है। जिसमें विकारी गुण नहीं

–ऐसी निजगुण–मुक्ति का सुगम पंथ है। भगवान शुद्ध आत्मा द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म से रहित है –ऐसा जिसे अन्तर में भान हुआ, उसे तो मोक्ष का सरल रास्ता हाथ आ गया। अनन्त काल से क्रिया करके दु:ख वेदकर मोक्ष लेने के लिए हैरान हो गया; परन्तु मोक्ष नहीं मिला; उसे अब यह समयसार–रूप सुगमपंथ मिल गया। जिसने शुद्धात्मा को देखा उसके हाथ में अब उसमें रमने की रीति आ गई।

धवल में आता है न! समकिती ने मोक्ष का मार्ग देख लिया है कि यह शुद्धात्मा है और यह इसमें लीन होने का मार्ग है। उसको अब मार्ग पर चलकर मोक्ष पाना सहज है और मिथ्यादृष्टि ने मार्ग देखा नहीं; इससे उसे कठिन लगता है।

समयसार का यश गाते इन्द्र थकता है अर्थात् समयसार की महिमा का वर्णन करते इन्द्र भी लज्जित होता है कि मैं छोटे मुँह बड़ी बात करता हूँ। ऐसी यह ऊँची बात है; उसे पण्डितों ने सुगम करके अपने को बतलाई है। बनारसीदासजी लिखते हैं कि–

पाण्डे राजमल्ल जिन धर्मी, नाटक समयसार के मर्मी।
तिन ग्रन्थ की टीका कीनी, बालबोध सुगम कर दीनी॥

राजमल्लजी समयसार के मर्मी थे। उन्होंने कलश टीका बनाकर साधारण मनुष्य भी समझ सके –ऐसा समयसार को सरल बना दिया है। इसलिए कहा (पूज्य गुरुदेव ने कहा) कि इस कलश टीका का गुजराती भाषांतर हो तो अच्छा.."घर–घर नाटक कथा बखानी" घर–घर में समयसार की बात होने लगी है। होनी ही चाहिए। ऐसा उत्तम मनुष्यदेह पाया है तो बालक से लेकर सभी जीव यह समझें तो उनका हित हो– ऐसी बात है। अभी तो यह समयसार के प्रचार का युग है।

समयसार अर्थात् शास्त्र–जिनवाणी और आत्मा। उसकी महिमा करते इन्द्र भी थकता है कि जिसकी महिमा का वर्णन गणधरदेव भी पूर्ण नहीं कर सकते, उसका वर्णन मैं क्या करुँ? ऐसे इस समयसार का जो पक्ष करते है;

वे जीव, जैसे पक्षी गगन में उड़ता है, वैसे ज्ञानगगन में उड़कर उर्ध्व में चले जाते हैं।

श्रोता:- आत्मा का अनुभव किये बिना उर्ध्व-मोक्ष में किस प्रकार जाये ?

पूज्य गुरुदेवश्री:- समयसार का पक्ष आया उसका अर्थ ही यह है कि उसे आत्मा का अनुभव हुआ। राग और पर्याय की बुद्धि थी, वह पक्ष छोड़कर जो आत्मा के पक्ष में चढ़ा; वह सम्यग्ज्ञानरूपी गगन में उड़कर मोक्ष में चला जाता है। पक्षी आकाश में सहज-सहज उड़ता है। उसे बीच में पानी, पर्वत, वृक्ष आदि कुछ भी आड़े नहीं आते, वैसे ही जिसको समयसार के पक्षरूपी पंख प्राप्त हुए हैं, उसको मोक्ष के मार्ग में आगे बढ़ने में कोई विघ्न आड़े नहीं आते, वह अपार ज्ञानगगन में आगे बढ़ जाता है और जो समयसार का विपक्षी है, वह जगत के जंजाल में फँसता है, चौरासी के अवतार में परिभ्रमण करता है।

जिसको द्रव्य और भाव से ॐकार का पक्ष आया है। द्रव्य अर्थात् शब्दब्रह्म और भाव अर्थात् आत्मा का जिसको पक्ष हुआ है, अन्दर से ॐकार आया है, उसकी गति को कोई रोक नहीं सकता और वह रुकने के लिए निकला भी नहीं है। वह तो अनन्त अपरिमित ज्ञानगगन में आगे... आगे... उड़ता जाता है। और इस समयसार का जिसको पक्ष नहीं हुआ अर्थात् उसका लक्ष्य जिसको नहीं हुआ, उसमें जो दक्ष नहीं है, उसको समयसार प्रत्यक्ष नहीं होता। इस कारण वह जगत की जंजाल में फँसता है।

जिसको अभी अपने भव की शंका हो, मैं भव्य हूँ या अभव्य-यह भी खबर न हो और भगवान की वाणी की परीक्षा करने निकले तो वह परीक्षा नहीं कर सकता। वह भवरहित भगवान की पहचान नहीं कर सकता और जो भगवान के पक्ष में आया है, वह तो स्वयं ज्ञानगगन में उड़कर केवलज्ञान प्राप्त कर लेता है।

यह ग्रन्थ शुद्ध स्वर्ण के समान निर्मल है। श्रीमद्जी कहते हैं न ''वचनामृत वीतराग के परम शान्त रस मूल....'' दुनिया में कहीं यह चीज नहीं है। वीतराग की वाणी शुद्ध चैतन्य को बतानेवाली है, उसके लिए कोई

कहे कि यह वाणी गृहस्थ को नहीं पढ़ना, साधु को ही पढ़ना चाहिए, अतः इसे गुप्त कर दो।

अरे भाई! यह छिपाने की वस्तु नहीं है। जो बाहर आया, वह वापिस नहीं जाता। माता के गर्भ में से पुत्र आया, क्या वह वापिस (गर्भ में) जाता है? यह तत्त्व बाहर आया, वह तो लोगो को निहाल कर दे ऐसा है। यह तत्त्व सुनकर जिसको रुचि और दृष्टि हुई, वह संसार से निकल गया समझो..... वह राग में से निकलकर स्वभाव में आ गया।

समयसार का विस्तार विराट है। विराट अर्थात् कितना? कि लोकालोक जितना जिसका विस्तार है। कृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट स्वरूप बताया था –ऐसा गीता में आता है, वैसे ही इस समयसार का विस्तार भी विराट है। गणधरदेव भी जिसके विस्तार को पूरा नहीं कह सके, उतना तत्त्व इसमें भरा है। नाटक सुनत हियै फाटक खुलत है –इस समयसाररूपी नाटक को जो सुनता है, उसके हृदयरूपी कपाट खुल जाते हैं, आड़ हटकर वस्तुस्वरूप क्या है यह समझ में आ जाता है। समझनेवाला ही न समझे, ऐसा नहीं हो सकता। यहाँ तो कहते हैं कि सुनते ही इसके हृदय के फाटक खुल जाते हैं।

अनुभव का वर्णन

कहौं सुद्ध निहचैकथा, कहौं सुद्ध विवहार।
मुकतिपंथकारन कहौं, अनुभौको अधिकार॥16॥

अर्थः– शुद्ध निश्चयनय, शुद्ध व्यवहारनय और मुक्तिमार्ग में कारणभूत आत्मानुभव की चर्चा वर्णन करता हूँ॥16॥

काव्य – 16 पर प्रवचन

अब, कवि अनुभव का वर्णन करता है।

अनुभव के वर्णन में मैं शुद्ध निश्चय स्वरूप भी कहूँगा और साथ ही वीतराग परिणतिरूप व्यवहार कैसा होता है, वह भी कहूँगा। अनुभव ही मोक्ष का पंथ है, उसका वर्णन मैं करूँगा।

अहा.....! सार में सार बात यह है। लाखों बातें सुने और विचारे, परन्तु करना तो एक ही है, वह है आनन्द स्वरूप आत्मा का अनुभव।

अनुभव से जीव की मोक्ष की धारा चलती है। इसलिए छहढाला में कहा है कि ''लाख बात की बात यही निश्चय उर लाओ..'' कवि का वर्णन तो देखो! उनको आनन्द की खुमारी फट निकली है। अहा..हा यह समयसार! यह वाणी! वीतरागता से नितरता तत्त्व है।

अनुभव का लक्षण

वस्तु विचारत ध्यावतैं, मन पावै विश्राम।
रस स्वादत सुख ऊपजै, अनुभौ याकौ नाम॥17॥

अर्थः- आत्मपदार्थ का विचार और ध्यान करने से चित्त को जो शान्ति मिलती है तथा आत्मिकरस का आस्वादन करने से जो आनन्द मिलता है, उसी को अनुभव कहते हैं॥17॥

काव्य - 17 पर प्रवचन

भगवान आत्मा के ज्ञानानन्दस्वरूप को विचारने पर और उसका ध्यान करने पर- उसमें एकाग्र होनेपर मन छूट जाता है, विश्राम पाता है। रागरहित, विकल्परहित, निर्मलानन्द शुद्ध चैतन्यवस्तु को ध्यानेपर जो आत्मिकरस का आस्वाद आता है, आनन्द प्राप्त होता है, उसे अनुभव कहते हैं।

नवतत्त्वों मे आत्मतत्त्व कैसा है? उसकी बात चलती है। नौ में एक तो अजीव है और सात पर्यायें हैं। अखण्ड, अभेद, एकरूप आत्मा का अनुभव करने पर मन विश्राम पाता है और चित्त में शान्ति उत्पन्न होती है। एक तरह से मन ठहर जाता है और इससे चित्त में शान्ति मिलती है। तथा आत्मिकरस का आस्वाद करने से जो आनन्द मिलता है, उसे ही अनुभव कहते हैं। इस अनुभव का समयसार में वर्णन किया है।

भगवान आत्मा चैतन्यरस का धाम है। उसके सन्मुख होकर उसका अनुभव करना अर्थात् आत्मा के आनन्दरस की प्राप्ति करना, उसका नाम धर्म है, उसका ही नाम अनुभव है, उसका ही नाम सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र है। बाकी विशेष जानपना हो या न हो, दुनिया को समझाते आवे या नहीं आवे, उसके साथ कोई सम्बन्ध नहीं।

क्रमशः

प्रेरक-प्रसंग

सदाचार का प्रभाव

छत्रसाल सदाचारी सत्यनिष्ठ एवं सहृदय प्रजा-वत्सल राजा थे। वे प्राय: प्रजा के सुख-दु:ख को देखने के लिए कभी-कभी रूप परिवर्तित करके घूमते थे। संकटों में फँसे हुए दु:खी एवं आपत्तिग्रस्त व्यक्तियों के दु:ख दूर करने के लिए देखभाल करते और उन्हें हर तरह की सहायता देकर संकटों से उबारने का प्रयत्न करते थे। गौर-वर्ण, बड़े-बड़े नेत्र, चौड़ा ललाट, दीर्घ बाहु, विशाल वक्ष:स्थल, सुन्दर दिव्य, सुसंगठित, मझौला उनका शरीर था। उनके शरीर-सौंदर्य पर एक स्त्री मोहित हो गई।

एक दिन जब उन्हें अपने दरवाजे के सामने से जाते हुए देखा तो सामने आकर कहने लगी—मैं बहुत दुखिया हूँ। महाराज ने सहजता से पूछा—आपको क्या दु:ख है देवीजी ? महाराज की दृष्टि नीचे थी। शांतनयन, सात्त्विक और गंभीर चेहरा था। उस नारी को छल करना था। कपटपूर्ण भौंहों को टेढ़ी करती हुई, इठलाती हुई बोली। श्रीमान ! मेरा दु:ख दूर करना है तो पहले मुझे वचन दो। आपके बिना वह दु:ख दूर नहीं हो सकता। मैं आपसे वचन लेना चाहती हूँ। दोगे न ? संभव हुआ तो तुम्हारा दु:ख अवश्य दूर करूँगा। महाराज ने कहा।

सहज चंचलता द्वारा अपनी आँख की भौंहें टेढ़ी करती हुई एवं कुचेष्टा करती हुई बोली—मुझे संतान नहीं है। पुत्रोत्पत्ति में मेरे पति असमर्थ हैं। मैं आप जैसे पुत्र की कामना करती हूँ। वह आपसे ही संभव हो सकता है। मैं आपको अपना शरीर तक सौंपने को तैयार हूँ। वह निर्लज्जतापूर्वक बोल रही थी। उसकी विकार भावना स्पष्ट नजर आ रही थी।

महाराजा छत्रसाल क्षण भर के लिए स्तब्ध होकर असमंजस में पड़ गये—किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए, किंतु शीघ्र संभल गए। हाथ जोड़कर बोले कि 'आपको मेरे समान ही पुत्र चाहिए न ? हे माता ! आज से यह छत्रसाल आपका पुत्र है।' उस देवी के चरणों में गिरते हुए उन्होंने कहा। उस स्त्री की दूषित भावना भाग गई। विकार की जगह पवित्रता आ गई। उस दिन से उस स्त्री का, वे राजमाता के समान सम्मान करते थे।

शिक्षा - सदाचारी पुरुष किसी भी परिस्थिति में अपने नियम-संयम में दृढ़ रहते हैं। उनकी दृढ़ता से अन्य जनों को भी सदाचार की प्रेरणा मिलती है।

साभार : बोध कथायें

जयो मङ्गलायतन　　　जयो मङ्गलायतन　　　जयो मङ्गलायतन

मङ्गल आमंत्रण

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के पावन अवसर पर
तीर्थधाम मङ्गलायतन
में
श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ एवं
श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं श्री पंचास्तिकाय संग्रह विधान व निर्वाण महोत्सव

(गुरुवार, दिनांक २४ अक्टूबर से सोमवार, दिनांक २८ अक्टूबर २०१९)

सद्धर्मानुरागी बंधुवर,
सादर जयजिनेन्द्र एवं शुद्धात्म सत्कार!

ॐ

आपको यह जानकर हर्ष होगा, वीर निर्वाण के अवसर में, कुन्दकुन्दादि दिगम्बर आचार्यों की अनुकम्पा से और पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी, पद्मश्री ब्रह्मचारिणी बहिनश्री चम्पाबेन के प्रभावना योग से एवं आप सभी के सहयोग से **तीर्थधाम मङ्गलायतन,** जिनशासन की आराधना-प्रभावना का महत् कार्य कर रहा है।
प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी, अन्तिम तीर्थंकर भगवान श्री महावीरस्वामी के निर्वाण कल्याणक प्रसंग पर, **तीर्थधाम मङ्गलायतन** के सुरम्य वातावरण में पंच दिवसीय **आध्यात्मिक शिक्षण शिविर** का आयोजन **गुरुवार, दिनांक २४ अक्टूबर से सोमवार, दिनांक २८ अक्टूबर २०१९** तक किया जा रहा है।
इस शिविर में पूज्य गुरुदेवश्री के भावभरपूर सीडी प्रवचन, उन्हीं के मर्म को प्रकाशित करनेवाले विद्वानों के स्वाध्याय, पूजन-विधान एवं मंगलार्थीयों द्वारा धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जायेंगे। इस अवसर पर **श्री पंचास्तिकाय संग्रह विधान** के साथ **भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव** मनाया जायेगा।
सभी तत्त्वप्रेमी महानुभावों से निवेदन है कि धर्म लाभ लेने हेतु शीघ्र ही पत्र या फोन द्वारा हमें सूचना प्रदान करें। ऐसे दुर्लभ अवसर पर, लाभ प्राप्त करने हेतु, आप सभी को हमारा भावभीना आमन्त्रण है। कृपया अवश्य पधारकर तत्त्वज्ञान का लाभ अर्जित कीजिए।
जैनं जयतु शासनम् ।

पण्डित विमलचन्द झांझरी, उज्जैन पण्डित वीरेन्द्र जैन, आगरा पण्डित राजेन्द्रकुमार, जबलपुर डॉ. राकेशकुमार जैन, नागपुर
डॉ. योगेशचन्द्र जैन, अलीगढ़ पण्डित अरहन्त झांझरी, उज्जैन पण्डित जागेश जैन, विदिशा पण्डित मनीष जैन, जबलपुर
पण्डित अशोक लुहाड़िया, पण्डित सचिन जैन, पण्डित सुधीर शास्त्री, पण्डित अभिनन्द शास्त्री

विधान आयोजनकर्ता: श्री जैन परिवार, मेरठ
शिविर आयोजनकर्ता: श्री जैन परिवार, अलवर
सहआयोजनकर्ता: श्री जैन परिवार, अहमदाबाद
मंगल कलश: श्री जैन परिवार, कानपुर
श्री जैन परिवार, देहरादून

मुख्य आकर्षण
श्री पंचास्तिकाय संग्रह विधान ।
पूज्य गुरुदेवश्री का सीडी प्रवचन
विद्वानों द्वारा विशिष्ट स्वाध्याय । आध्यात्मिक गोष्ठी
मोक्षमार्ग प्रकाशक कक्षा शिक्षण । निर्वाण महोत्सव
सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ उज्जैन एवं मंगलार्थीयों द्वारा
स्वामी मिलन । मङ्गलायतन दर्शन

निवेदक

अजितप्रसाद जैन, अध्यक्ष / स्वप्निल जैन, महामंत्री
श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ (उ.प्र.)

प्रदीप झांझरी, अध्यक्ष / नागेश जैन, महामंत्री
श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन (म.प्र.)

सुधीर जैन शास्त्री, तीर्थधाम मङ्गलायतन, डीपीएस स्कूल के पास, अलीगढ़-आगरा राजमार्ग, सासनी, हाथरस (उ०प्र०)

0997990346, 9756633800　　www.mangalayatan.com　　info@mangalayatan.com

नोट :- कृपया पत्रिका को मन्दिरजी में लगवा देवें।

वीतरागी-विज्ञान में ज्ञात होता
— विश्व के ज्ञेय पदार्थों का स्वभाव —

गतांक से आगे

इस गाथा में अभी तक चार बोल आये :—

(1) द्रव्य का अखण्ड प्रवाह एक है और उसके क्रमशः होनेवाले अंश, सो परिणाम हैं।

(2) उन परिणामों में अनेकता है, क्योंकि परस्पर व्यतिरेक है।

(3) तीनों काल के परिणामों का पूरा दल लेकर समस्त परिणामों में सामान्यरूप से उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यपना कहा।

(4) सम्पूर्ण प्रवाह का एक अंश लेकर प्रत्येक परिणाम में उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य कहे।

—ऐसे चार प्रकार हुए। इस प्रकार परिणाम का उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यपना निश्चित् करके, अब अन्त में परिणामी द्रव्य में उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य सिद्ध करते हैं।

'इस प्रकार स्वभाव से ही त्रिलक्षण परिणामपद्धति में (परिणामों की परम्परा में) प्रवर्तमान द्रव्यस्वभाव का अतिक्रमण न करने से सत्त्व को त्रिलक्षण ही अनुमोदना।'

द्रव्य के समस्त परिणाम उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यस्वरूप हैं और उन परिणामों के क्रम में प्रवर्तमान द्रव्य भी उत्पाद-व्यय-ध्रौव्ययुक्त ही है। यदि परिणाम की भाँति द्रव्य भी उत्पाद-व्यय-ध्रौव्ययुक्त न हो तो वह परिणामों की परम्परा में वर्त ही नहीं सकता। जो द्रव्य है, सो उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यरूप समस्त परिणामों की परम्परा में वर्तता है, इससे उसके भी उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य हैं। परिणामों की पद्धति कही है, अर्थात् जिस प्रकार साँकल की

कड़ियाँ आगे-पीछे नहीं होती; उसी प्रकार परिणामों का प्रवाहक्रम नहीं बदलता; जिस समय द्रव्य का जो परिणाम प्रवाहक्रम में हो, उस समय उस द्रव्य का वही परिणाम होता है—दूसरा परिणाम नहीं होता। देखो, यह वस्तु के सत् स्वभाव का वर्णन है। वस्तु का सत्स्वभाव है, सत् उत्पाद-व्यय-ध्रौव्ययुक्त परिणाम है और उसे भगवान द्रव्य का लक्षण कहते हैं—'सत् द्रव्य लक्षणं।' तेरा स्वभाव जानने का है। जैसा सत् है, वैसा तू जान। सत् को उलटा-सीधा करने की बुद्धि करेगा तो तेरे ज्ञान में मिथ्यात्व होगा। वस्तुएँ सत् हैं और मैं उनका ज्ञाता हूँ—ऐसी श्रद्धा होने के पश्चात् अस्थिरता का विकल्प उठता है, किन्तु उसमें मिथ्यात्व का जोर नहीं आता। इसलिए ऐसी ज्ञान और ज्ञेय की श्रद्धा के बल से उस अस्थिरता का विकल्प भी टूटकर वीतरागता और केवलज्ञान होगा ही!—ऐसी यह अलौकिक बात है।

यह विषय अत्यन्त सूक्ष्म, परम सत्य एवं गम्भीर है।

सर्वज्ञदेव ने केवलज्ञान में वस्तु का स्वभाव जैसा है, वैसा पूर्ण जाना और वैसा ही वाणी में आ गया। जैसा वस्तु का स्वभाव है, वैसा जानकर माने तो ज्ञान और श्रद्धा सम्यक् हो; वस्तु के स्वभाव को यथावत् न जाने तथा अन्य रीति से माने तो सम्यक्ज्ञान और सम्यक्श्रद्धा नहीं होते, और उनके बिना व्रत-तपादि सच्चे नहीं होते। वस्तु के स्वभाव की स्थिति क्या है और उसके नियम कैसे सत्य हैं, उसका यह वर्णन है। इसे समझाने के लिए ज्ञान में एकाग्र होने की आवश्यकता है।

देखो, अभी तक क्या कहा गया है? प्रत्येक चेतन और जड़ पदार्थ स्वयं सत् है, उसमें एक-एक समय में परिणाम होता है; वह परिणाम उत्पाद-व्यय-ध्रौव्ययुक्त है। मूल वस्तु त्रिकाल है, वह वस्तु असंयोगी—स्वयंसिद्ध है, वह किसी से निर्मित नहीं है और न कभी उसका नाश होता है; जब देखो तब वह सत्रूप से वर्तमान वर्त रही है। *क्रमशः*

आत्मधर्म (हिन्दी), वर्ष 7, अंक चार

आत्मार्थी का पहला कर्त्तव्य (4)

नवतत्त्व का ज्ञान सम्यग्दर्शन का व्यवहार है

नवतत्त्व भिन्न-भिन्न हैं, उनमें अनेकता है, उस अनेकता का लक्ष्य राग का कारण है, इसलिए 'नवतत्त्वों की श्रद्धा वह सम्यग्दर्शन है' - ऐसा नियम नहीं कहा। उन नवतत्त्वों में एकत्व प्रगट करनेवाला शुद्धनय है, उस शुद्धनय से एकरूप आत्मा का अनुभव करना ही नियम से सम्यग्दर्शन है। 'भूतार्थनय से नवतत्त्वों में एकत्व प्रगट करना' - इसका अर्थ यह है कि - नवतत्त्वों के भेद का लक्ष्य छोड़कर, भूतार्थनय से एकरूप आत्मा को लक्ष्य लेना। भूतार्थनय में नवतत्त्व दृष्टिगोचर नहीं होते, किन्तु एकरूप ज्ञायक आत्मा ही दिखाई देता है। कहीं नवतत्त्वों के सन्मुख देखने से उनमें एकत्व नहीं होता, नवतत्त्वों के सन्मुख देखने से तो राग की उत्पत्ति होती है। नवतत्त्वों के भेद का लक्ष्य छोड़कर अभेद चैतन्य को शुद्धनय से जानने पर, नवतत्त्वों में एकत्व प्रगट किया कहा जाता है।

भेदरूप नवतत्त्वों को यथावत् जाना, वहाँ तक तो आंगन आया, उस आंगन में आने के पश्चात् अब, वहाँ से आगे बढ़कर चैतन्यगृह में जाने और शुद्धस्वभाव की प्रतीति तथा अनुभव करने की बात है, यानी अनादिकालीन मिथ्यात्व को दूर करके अपूर्व सम्यग्दर्शन कैसे प्रगट हो - उसकी यह बात है। यहीं से धर्म का प्रारम्भ होता है।

नवतत्त्व तो अभूतार्थनय से ही विद्यमान हैं, भूतार्थनय से अभेदस्वभाव में एकत्व प्रगट करने से वे नवों तत्त्व अभूतार्थ हैं। ज्ञायक चैतन्य हूँ - ऐसे अंतर में विद्यमान स्वभाव के आश्रय की दृष्टि से एक आत्मा का अनुभव होता है। शुद्धनय से ऐसा अनुभव होने पर अनादिकालीन मिथ्यात्व दूर होकर अपूर्व सम्यग्दर्शन प्रगट होता है और धर्म का प्रारम्भ होता है।

नवतत्त्वों को अभूतार्थ कहा, उसमें जीवतत्त्व भी आ गया, यानी

जीवतत्त्व को भी अभूतार्थ कहा – वह किस प्रकार ? शुद्ध जीवतत्त्व है, वह तो भूतार्थ है, किन्तु 'मैं जीव हूँ' – ऐसा जीव संबंधी विकल्प उठे, वह अभूतार्थ है, उस विकल्प के द्वारा जीवस्वभाव का अनुभव नहीं हो सकता, इसलिए 'मैं जीव हूँ' – ऐसे रागमिश्रित विकल्प को जीवत्व के रूप में गिनकर उसे यहाँ अभूतार्थ कहा है – ऐसा समझना चाहिए।

नव तत्त्वों में अनेकता है, उनके विचार में अनेक समय लगते हैं, एक समय में एक ही साथ नवों तत्त्वों के विकल्प नहीं होते, उन नवतत्त्वों के लक्ष्य से राग की उत्पत्ति होती है और अंतर में चैतन्य की एकता का अनुभव एक समय होता है। प्रथम अभेद चैतन्यस्वभाव में अंतरमुख होकर श्रद्धा से चैतन्य में एकत्व प्रगट करना, वह अपूर्व सम्यग्दर्शन है। व्यवहारनय तो नवतत्त्व के भेद से आत्मा का अनेकत्व प्रगट करता है, उस अनेकत्व प्रगट करनेवाले नय से चैतन्य के एकत्व की प्राप्ति नहीं होगी और चैतन्य के एकत्व की प्राप्ति के बिना रागरहित आनंद का अनुभव नहीं होता – सम्यग्दर्शन प्रगट नहीं होता। भूतार्थनय नवतत्त्व के विकल्प से रहित चैतन्य का एकत्व प्रगट करनेवाला है, उसी के आश्रय से सम्यग्दर्शन होता है। नव तत्त्वों की श्रद्धा चैतन्य का एकत्व प्रगट नहीं करती और न उसके आश्रय से सम्यग्दर्शन प्रगट होता है। नवतत्त्वों की श्रद्धा को सम्यग्दर्शन के व्यवहाररूप से स्थापित किया गया है, किन्तु उसके द्वारा अभेदस्वभाव में एकता नहीं होती। अभेदस्वभाव के आश्रय से ही आत्मा का एकत्व प्राप्त होता है। अभेदस्वभाव के आश्रय से आत्मा में एकत्व प्राप्त करना, वह परमार्थ सम्यग्दर्शन है और वही प्रथम धर्म है। *क्रमशः*

आत्मधर्म (हिन्दी), वर्ष 7, अंक चार

गणधरों के द्वारा नमस्कार योग्य मुनिदशा

गणधरदेव कहते हैं कि जिसमें हमारा नमस्कार झेलने की ताकत हो – ऐसे सन्तों को हम साधु कहते हैं, उन सन्तों का चारित्र आनन्दमय है, वे सन्त दुःखी नहीं हैं। *(पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी)*

मोक्षतत्त्व का साधन (4)

श्री प्रवचनसार गाथा 273 पर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीजी का प्रवचन

271वीं गाथा में संसारतत्त्व का और 272वीं गाथा में मोक्षतत्त्व का वर्णन किया। उस मोक्षतत्त्व का साधन क्या है, वह अब 273वीं गाथा में कहेंगे।

जो परपदार्थ हैं, सो मैं ही हूँ और विकार जितना ही मैं हूँ - ऐसी विपरीत मान्यतावाला जीव, सो संसारतत्त्व है। आत्मा नित्य ज्ञानानन्दस्वरूप है, वह शरीरादि पर से भिन्न है और रागादि उसका स्वभाव नहीं है, ऐसे आत्मा को भूलकर, उसकी अवस्था में जो यह शरीर और विकार है, सो मैं ही हूँ - उसी मिथ्या मान्यतापूर्वक राग-द्वेष के भाव, सो संसार हैं। संयोग का संसार नहीं है। आत्मा के पवित्र स्वरूप से च्युत हो जाना और विकार में रहना, उस भाव को संसार कहते हैं और जिस आत्मा में विकाररहित पूर्ण शुद्धदशा प्रगट हुई हो तो वह आत्मा स्वयं मोक्षतत्त्व है। आत्मा के स्वभाव को जानकर उसमें जो लीन हुए हैं, ऐसे शुभोपयोगी मुनि को मोक्षतत्त्व कहा है। संसारतत्त्व और मोक्षतत्त्व आत्मा से बाहर नहीं हैं, किन्तु मिथ्यात्वभाव वाला आत्मा, सो संसारतत्त्व है और पवित्र निर्दोषभाववाला आत्मा, सो मोक्षतत्त्व है। उस मोक्षतत्त्व का साधन कहीं बाह्य में नहीं है, किन्तु आत्मा में ही है। उस मोक्षतत्त्व का वर्णन करते हैं -

सम्म विदिदपदत्था चत्ता उवहिं बहित्थमज्झत्थं।
विसयेसु णावसत्ता जे ते सुद्ध त्ति णिद्दिट्ठा॥273॥
जाणी यथार्थ पदार्थ ने, तजी संग अंतर्बाह्यने।
आसक्त नहि विषयो विषे जे, 'शुद्ध' भाख्या तेमने॥273॥

श्री आचार्यदेव ने प्रवचनसार की अन्तिम पाँच गाथाओं को पाँच रत्नों की उपमा दी है, उनमें यह तीसरा रत्न है।

इसमें सर्व प्रथम पदार्थ को यथार्थ जानने की ही बात की है। पदार्थ को यथार्थ जाने बिना कभी मोक्ष का साधन प्रगट नहीं होता। सकल महिमावन्त भगवन्त शुद्धोपयोगी मुनि ही मोक्षतत्त्व का साधनतत्त्व हैं। वे मुनि कैसे हैं - उसका वर्णन करते हैं। प्रथम तो, 'अनेकान्त द्वारा ज्ञात होता जो सकल ज्ञातृतत्त्व का और ज्ञेयतत्त्व का स्वरूप, उसके पाण्डित्य में प्रवीण हैं।'

अनेकान्त का अर्थ क्या ? वस्तु अपने रूप से है और पर रूप से नहीं है - ऐसा जानना, सो अनेकान्त है। आत्मा आत्मारूप है और शरीररूप नहीं है, इसलिए वह शरीरादि का कुछ नहीं कर सकता - ऐसा जानना, सो अनेकान्त है। किन्तु शरीरादि पर की क्रिया मैं कर सकता हूँ और उस क्रिया से मुझे लाभ-हानि होते हैं - ऐसा माने तो उसने आत्मा और शरीर को भिन्न न मानकर दो पदार्थों को एक माना, इससे वह एकान्त है। शरीर की या पर की क्रिया आत्मा करता है - ऐसा माना, उसका तो यह अर्थ हुआ कि वह परपदार्थ पररूप है और मेरे रूप भी है तथा आत्मा अपने रूप है और पररूप भी है - ऐसी मान्यता, सो मिथ्यात्व है। ऐसी मिथ्यामान्यतावाले जीव को मोक्ष का साधन प्रगट नहीं होता। पररूप हुए बिना आत्मा पर का नहीं कर सकता। आत्मारूप जो वस्तु नहीं है अर्थात् जिस वस्तु में आत्मा का अभाव है, उस वस्तु में आत्मा के कारण परिवर्तन नहीं होता। इसप्रकार अनेकान्त ज्ञान द्वारा आत्मतत्त्व को और समस्त ज्ञेय पदार्थों को मुनियों ने यथार्थ जाना है। उन्हें जाने बिना मोक्ष का साधन जो शुद्धोपयोग है, वह प्रगट नहीं होता। अनेकान्त से जब समस्त स्व-परपदार्थों के स्वरूप का यथार्थ निर्णय करे, तब तो संसार से छूटने का प्रथम उपाय प्रगट होता है।

प्रत्येक तत्त्व अपने रूप से है और पररूप से नहीं है, इसलिए पर के अभाव से ही प्रत्येक तत्त्व बना हुआ है, प्रत्येक तत्त्व अपने से परिपूर्ण है और अपने से ही टिका हुआ है, पर के आधार से कोई तत्त्व स्थिर नहीं रहता। इस प्रकार स्व और परपदार्थ की भिन्नता तथा स्वतन्त्रता का

अनेकान्तज्ञान द्वारा निर्णय करे, वही सच्चा पाण्डित्य है। अनेक शास्त्र पढ़ लेना, सो पाण्डित्य है - ऐसा नहीं कहा, किन्तु स्व-पर का विवेक प्रगट करना ही सच्चा पाण्डित्य है। वह विवेक प्रगट किये बिना सब शास्त्र-अध्ययन मिथ्या हैं।

आत्मतत्त्व अपने से अस्तिरूप है और पर के अभावरूप है, इसलिए परवस्तुओं के बिना ही उसका त्रिकाल निभ रहा है। तथापि मेरा तत्त्व पर के आश्रयवाला है, परवस्तु के बिना मेरा नहीं चल सकता - ऐसी मिथ्या-मान्यता अनादि काल से बना रखी है, उसके बिना अज्ञानी ने अनादि काल से नहीं चलाया। मैं पर से भिन्न हूँ, मेरा तत्त्व पर के आश्रय बिना ही टिका हुआ है - ऐसा समझ लेने पर सम्यक्त्व प्रगट होने से जीव मिथ्यात्व के बिना निभाता है। सम्यक्त्व प्रगट हुआ, इसलिए मिथ्यात्व का अभाव हो गया, तथापि अभी अस्थिरता के कारण राग-द्वेष के भाव होते हैं। मिथ्यात्व के बिना चलाता है, किन्तु आसक्तिभाव के बिना नहीं चलाता, यदि उस आसक्ति के राग-द्वेषभाव बिना भी चलाये तो चारित्रदशा प्रगट हो। आत्मा का भान होने पर भी जबतक राग-द्वेष के विकल्प हों, तबतक शुद्ध उपयोग नहीं होता। जो शुद्ध आत्मस्वरूप का भान हुआ है, उसके अनुभव में स्थिर होने से आसक्ति के राग-द्वेषभाव भी छूटकर शुद्धोपयोग प्रगट होता है, उसका नाम चारित्रदशा है। ऐसी दशावाले मुनि को मोक्ष का साधन तत्त्व कहा जाता है। शुद्धोपयोग मोक्ष का साधन है, वह शुद्धोपयोग जिसके प्रगट हुआ है - ऐसे शुभोपयोगी मुनि को ही यहाँ अभेदरूप से मोक्षतत्त्व का साधन कहा है।

आत्मा का यथार्थ भान प्रगट करने के पश्चात् उसके विशेष अनुभव में लीन होकर शुद्धोपयोग प्रगट करनेवाले उन मोक्षमार्गी मुनियों की दशा का विशेष वर्णन करते हैं। *क्रमशः*

आत्मधर्म (हिन्दी), वर्ष 7, अंक चार

आचार्यदेव परिचय शृंखला

भगवान आचार्यदेव
श्री अनन्तकीर्तिजी

दर्शन साहित्य के ज्ञाता कई अनन्तकीर्ति आचार्यों में आप अपने में अनूठे हैं। आपने 'बृहत्सर्वज्ञसिद्धि' व 'लघुसर्वज्ञसिद्धि' नामक दो ग्रन्थों की रचना करके, दिगम्बर जैन साहित्य में अपनी अमिट सुगन्ध को महकाकर जैन जगत में आप अमर वरदानरूप हुए हैं।

आप अपने युग के प्रख्यात तार्किक विद्वान आचार्य थे। आपने स्वप्रज्ञान को मानस प्रत्यक्ष ज्ञान माना है।

आपके ग्रन्थ में सन्मतितर्क के टीकाकार आचार्य अभयदेवसूरि व आचार्य विद्यानन्दस्वामी की छाप स्पष्ट प्रतिबिम्बित होती है। आपकी महिमा आपके पश्चातवर्ती आचार्य वादिराज ने भी गायी है।

विद्वानों के मतानुसार आप भगवान आचार्य विद्यानन्दीजी के समवर्ती प्रतीत होते हैं। आपके समय के बारे में विविध विद्वान अलग-अलग मत रखते हैं, फिर भी आप ईसा की आठवीं शताब्दी के उत्तरार्द्धवर्ती आचार्य हैं, ऐसा आपका समय मानने में कोई दो मत नहीं हैं।

'सर्वज्ञ की सिद्धि करने में निपुण' आचार्य अनन्तकीर्तिस्वामी को कोटि-कोटि वन्दन।

भगवान आचार्यदेव
श्री कुमारनन्दि

श्री कुमारनन्दि दक्षिण प्रदेश के महान प्रभावशाली, वादन्याय विचक्षण, व तार्किक चूडामणि महान आचार्यदेव हुए हैं। विद्यानन्दी आचार्यदेव ने 'पत्र परीक्षा', 'प्रमाण-परीक्षा' व 'तत्त्वार्थश्लोकवार्तिका-लंकार' में आपका भूरा-भूरा गुणकीर्तन ही किया हो, ऐसा नहीं परन्तु

आपके प्रभाव के रूप में आपके कई उदाहरण भी अपने ग्रन्थ में प्रस्तुत किये हैं।

वैसे जिनशासन में आपका नाम अप्रसिद्ध रहा है, क्योंकि आपकी कोई रचना वर्तमान में उपलब्ध नहीं है, पर आपके बारे में आपके साहित्य संबंधित जो प्रकाश हुआ है, वह महान आचार्य विद्यानन्दिकृत विविध ग्रंथों में, कई स्थानों पर मिले उल्लेखों से ज्ञात होता है।

दक्षिण में श्रीपुर जिनालय से मिले 'नाममंगल' ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि ई. सन् आठवीं शताब्दी के बीच आपका समय होना चाहिए। उस ताम्रपत्र से यह भी पता चलता है कि आपके गुरु भगवान आचार्य चन्द्रनन्दी थे। आपके शिष्य कीर्तिनन्दी व प्रशिष्य विमलचन्द थे।

आपका एक ही ग्रन्थ 'वादन्याय विचक्षण' प्रसिद्ध है। हो सकता है, अन्य ग्रन्थ भी हों, पर उल्लेख नहीं मिला है, पर यह 'वादन्याय विचक्षण' ग्रन्थ भी उपलब्ध नहीं है।

जो कुछ भी हो, इतना स्पष्ट है कि आचार्य कुमारनन्दि एक प्रभावशाली तार्किक व जैन न्याय के महान विद्वतायुक्त ज्ञाता आत्मज्ञानी भावलिंगी सन्त थे।

आप ईसु की 8वीं-9वीं शताब्दी के आचार्य हों, ऐसा विद्वानों का मत है।

आचार्यदेव कुमारनन्दि भगवन्त को कोटि-कोटि वन्दन। ❀

नवीन प्रकाशन - मोक्षमार्गप्रकाशक

तीर्थधाम मङ्गलायतन द्वारा प्रथम बार **आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी द्वारा विरचित मोक्षमार्गप्रकाशक की मूल हस्तलिखित प्रति से पुनः मिलान करके, आधुनिक खड़ी बोली में प्रकाशित हुआ है।** जो मुमुक्षु संस्था, समाज स्वाध्याय हेतु मंगाना चाहते हैं। वे डाकखर्च देकर, निःशुल्क मंगा सकते हैं।

छहढाला (हिन्दी) नवीन संस्करण **सशुल्क**

ग्रन्थ मँगाने का पता— प्रकाशन विभाग, तीर्थधाम मङ्गलायतन,
अलीगढ़-आगरा राजमार्ग, सासनी-204216
सम्पर्क सूत्र-9997996346 (कार्या०); 9756633800 (पण्डित सुधीर शास्त्री)
Email : info@mangalayatan.com; website : www.mangalayatan.com

समाचार-सार

तीर्थधाम मङ्गलायतन में दशलक्षण पर्व सानन्द सम्पन्न

तीर्थधाम मङ्गलायतन - दशलक्षण पर्व इस वर्ष मंगलवार, 3 सितम्बर से गुरुवार, 12 सितम्बर 2019 तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस वर्ष डॉ० विवेक जैन, छिन्दवाडा; विदुषी पुष्पाबेन, खण्डवा एवं स्थानीय विद्वान पण्डित सचिन जैन, पण्डित सुधीर शास्त्री के स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रात: 06.30 बजे से जिनेन्द्र अभिषेक-पूजन, दशलक्षण विधान का आयोजन किया गया। प्रतिदिन मङ्गलार्थी छात्रों ने धोती-दुपट्टा पहनकर अभिषेक-पूजन किया। विधान मङ्गलार्थी छात्रों द्वारा करवाया जाता था। बीच-बीच में पण्डित सुधीर शास्त्री, पूजन-विधान का अर्थ करते थे। विधान के बाद 08.30 बजे से पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन छहढाला ग्रन्थ की पाँचवीं ढाल पर चला, जिसे सभी लोग बड़े ध्यान से रसास्वादन करते थे। प्रात:कालीन सभा में प्रथम स्वाध्याय विदुषी पुष्पाबेन का प्रवचनसार के आधार पर होता था। द्वितीय स्वाध्याय पण्डित सचिन जैन द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार से हुआ।

दोपहर में 02.15 बजे से आध्यात्मिक पाठ का आयोजन मङ्गलार्थी छात्रों द्वारा किया जाता था, जिसमें बारह भावना, समाधिमरण आदि का पाठ सस्वर करते थे। तत्पश्चात् 02.30 बजे से मङ्गलार्थी स्वाध्याय पश्चात् प्रथम स्वाध्याय डॉ० विवेक जैन द्वारा समयसार कलश टीका पर तथा द्वितीय स्वाध्याय पण्डित सचिन जैन का मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार से हुआ।

सायंकालीन सभा में 06.15 बजे से जिनेन्द्र भक्ति तथा प्रथम स्वाध्याय डॉ० विवेक जैन द्वारा दशलक्षण पर्व पर; द्वितीय स्वाध्याय विदुषी पुष्पाबेन द्वारा होता था। प्रतिदिन मङ्गलार्थी छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाये गए।

इस अवसर पर बाहर से पधारे अतिथियों ने भी लाभ लिया।

तीर्थधाम मङ्गलायतन द्वारा भावनगर - पण्डित अशोक लुहाड़िया; मलाड (मुम्बई) - डॉ० सचिन्द्र शास्त्री; सासनी-पण्डित सुधीर शास्त्री दशलक्षण पर्व पर पधारे।

मङ्गलार्थी छात्रों ने अपने स्वाध्याय में प्रतिदिन एक-एक धर्म की चर्चा की। सभी ने अपनी शक्ति अनुसार एकासन, उपवास आदि किए।

इस अवसर पर साहित्य में 25 प्रतिशत की छूट मङ्गलार्थी अरिन्दम जैन, सनावद द्वारा करवायी गई।

भावनगर : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर मङ्गलायतन से पण्डित अशोक लुहाड़िया पधारे थे। आपके द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान 08.30 से 09.30 तक, पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन, उसके पश्चात् समयसारजी के निर्जरा अधिकार पर तथा सायंकालीन सत्र में प्रतिक्रमण, भक्ति तथा धर्म के दशलक्षणों पर सारगर्भित स्वाध्याय का लाभ मुमुक्षु समाज को प्राप्त हुआ।

मलाड (मुम्बई) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर मङ्गलायतन से पधारे डॉ. सचिन्द्र शास्त्री के द्वारा सुबह दशलक्षण विधान, पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी प्रवचन, तत्पश्चात् प्रवचनसारजी पर स्वाध्याय तथा सायं को प्रतिक्रमण, भक्ति और मोक्षमार्गप्रकाशक, धर्म के दशलक्षण विषय पर उपस्थित उत्कर्ष मुमुक्षु मण्डल के साधर्मियों ने लाभ प्राप्त हुआ।

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अन्तिम दिन अनन्त चतुर्दशी का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया। प्रात: जिनमन्दिर पर छात्रों ने महावीरस्वामी का अभिषेक व पूजन किया। कार्यक्रम में तीर्थधाम मङ्गलायतन के निर्देशक पण्डित सुधीर शास्त्री ने जीवन दर्शन पर व्याख्यान देते हुए धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. केवीएस कृष्णा ने की। उन्होंने अहिंसा परमो धर्म पर जोर देते हुए अहिंसा की महिमा का वर्णन किया। विश्वविद्यालय के डायरेक्टर जनरल प्रो. एके मिश्रा ने बताया कि धर्म मानव जीवन को ऊँचाईयों की ओर ले जाता है, सच्चा धर्म तो निष्ठापूर्वक कर्तव्य का पालन करना होता है। कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं द्वारा रंगारंग नाटक, नृत्य एवं भजन की प्रस्तुतियाँ दी गईं। विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र ऋषभ व माइकल को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सिद्धार्थ जैन व लीना द्रुवा ने किया। कार्यक्रम के अन्त में सभी ने क्षमावाणी पर्व पर एक-दूसरे से क्षमा माँगी।

अजमेर : श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के अन्तर्गत दोनों जिनालयों श्री सीमन्धर जिनालय व श्री ऋषभायतन अध्यात्मधाम में दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न हुआ। दोनों मंदिरजी में विधानाचार्य पण्डित सुनील धवल, भोपाल एवं श्री विवेक शास्त्री, बण्डा द्वारा नित्य नियम पूजन, दशलक्षण विधान एवं सायंकाल भक्ति का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पण्डित प्रदीप झाँझरी, उज्जैन द्वारा प्रात: नियमसार ग्रन्थ के द्वितीय अधिकार तथा ध्यान के विषय में जानकारी दी गई। इसका स्पष्टीकरण ब्रह्मचारिणी बहिन मनोरमाजी, उज्जैन ने भावपूर्ण शब्दों में व्यक्त किया। रात्रि में दशलक्षण धर्म पर पण्डितजी के स्वाध्याय के पश्चात् प्रतिदिन विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न होते थे।

तीर्थधाम मङ्गलायतन में
इस वर्ष 'मोक्षमार्गप्रकाशक' महोत्सव

तीर्थधाम मङ्गलायतन ने पण्डित टोडरमलजी के 300 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 'मोक्षमार्गप्रकाशक वर्ष' मनाने का निर्णय लिया है। इसी शृंखला में—

— मूल प्रति से मिलान करके मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ छपाया।

— मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ पर प्रारम्भ से स्थानीय विद्वान पण्डित सचिन जैन द्वारा स्वाध्याय कराया जा रहा है, जो लन्दन समाज को और अन्य मुमुक्षु समाज के लिए यू-ट्यूब पर लोड किए जा रहे हैं। अब तक 25 प्रवचन अपलोड कर दिए गए हैं।

— मङ्गलायतन में प्रात:कालीन स्वाध्याय में श्री पवन जैन द्वारा मोक्षमार्ग-प्रकाशक पर ही चर्चा-वार्ता की जा रही है।

— मोक्षमार्गप्रकाशक के नौ अधिकारों की प्रश्नोत्तरमाला का निर्माण जल्द ही किया जाएगा। जो नए स्वाध्यायियों एवं बच्चों के लिए लाभप्रद होगी।

— मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ का एक बार पुन: निरीक्षण श्री पवन जैन और डॉ० सचिन्द्र शास्त्री के द्वारा किया जा रहा है।

— भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन के मङ्गलार्थी छात्रों के पाठ्यक्रम में श्री पवन जैन द्वारा कक्षा 8वीं को, अधिकार - 1, 6; पण्डित सचिनजी द्वारा कक्षा 10वीं को अधिकार - 2, 3, 4; डॉ० सचिन्द्र शास्त्री द्वारा कक्षा 11-12वीं को अधिकार - 7, 8, 9 पढ़ाया जा रहा है।

एक अपूर्व नवीन प्रकाशन **अवश्य पठनीय/चिन्तनीय**

सम्यग्दर्शन की विधि

लेखक : सी.ए. जयेश मोहनलाल शेठ (बोरीवली), बी.काम., एफ.सी.ए.

सम्पादन : मनीष मोदी **प्रकाशक :** शैलेश पूनमचन्द शाह

सम्पर्क और प्राप्तिस्थान :

शैलेष पूनमचन्द शाह - 402, पारिजात, स्वामी समर्थ मार्ग, (हनुमान क्रॉस रोड 2) छत्रपति शिवाजी स्कूल के सामने, विले पार्ले(ईस्ट), मुम्बई-400057।
email : spshah1959@gmail.com
फोन : 26133048, मोबा.: 9892436799 / 7303281334

तीर्थधाम मङ्गलायतन आपका हार्दिक स्वागत करता है

आपका सहयोग अपेक्षित है

1.	**भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन**	
	एक वर्ष के लिए (एक विद्यार्थी)	25,000/-
	सम्पूर्ण अध्ययन काल के लिए (एक विद्यार्थी)	1,00,000/-
2.	**अतिथि भोजनशाला**	
	एक माह का भोजन	2,00,000/-
	एक दिन का भोजन (जलपान सहित)	15,000/-
	एक समय का भोजन	6,100/-
	एक समय का जलपान	3,100/-
3.	**तीर्थधाम मङ्गलायतन : ध्रुवपूजन तिथि**	
	सभी जिनमन्दिर	5,100/-
	प्रत्येक जिनमन्दिर हेतु ध्रुवपूजन तिथि	1,100/-
4.	**'मङ्गलायतन' मासिक पत्रिका**	
	अपनी ओर से एक अंक के प्रकाशन हेतु	21,000/-
	आजीवन सदस्यता	500/-
5.	**'मङ्गल वात्सल्य निधि'**	
	आजीवन सदस्यता (प्रति माह)	1,000/-

आप अपनी सहयोग राशि सीधे बैंक में भी जमा करवा सकते हैं।

नाम - **श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़**

बैंक - **पंजाब नेशनल बैंक** ब्रांच - **रेलवे रोड, अलीगढ़**

A/c No. - 1825000100065332 IFSC - PUNB0001000

PAN - AABTA0995P

नोट - भारत सरकार ने **मङ्गलायतन** को किसी भी रूप में दी जानेवाली प्रत्येक दानराशि पर, आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्रदान की है।

श्रीमान सद्धर्मानुरागी बन्धुवर,

सादर जयजिनेन्द्र एवं शुद्धात्म सत्कार!

आशा है आराधना-प्रभावनापूर्वक आप सकुशल होंगे।

वीतरागी जिनशासन के गौरवमयी परम्परा के सूत्रधार पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभावनायोग में निर्मित आपका अपना **तीर्थधाम मङ्गलायतन** सत्रह वर्षों से, सुचारुरूप से, अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर गतिमान है।

वर्तमान काल की स्थिति को देखते हुए, अब **मङ्गलायतन** का जीर्णोद्धार एवं अनेक प्रभावना के कार्य, जैसे-भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन, भोजनशाला, **मङ्गलायतन** पत्रिका प्रकाशन आदि कार्यों को सुचारू रूप से भी व्यवस्था एवं गति प्रदान करना है। यह कार्य आपके सहयोग के बिना, सम्भव नहीं हैं। इसके लिए हमने एक योजना बनायी है, जिसमें आपको एक छोटी राशि प्रतिमाह दानस्वरूप प्रदान करनी होगी। इस योजना का नाम - **'मङ्गल वात्सल्य-निधि'** रखा गया है। हम आपको इस महत्त्वपूर्ण योजना में सम्मानित सदस्य के रूप में शामिल करना चाहते है। **'मङ्गल वात्सल्य-निधि'** में आपको प्रतिमाह, मात्र एक हजार रुपये दानस्वरूप देने हैं।

मङ्गलायतन का प्रतिमाह का खर्च, लगभग दस लाख रुपये है। इस योजना के माध्यम से आप हमें प्रतिमाह 1,000 (प्रतिवर्ष 1000X12=12,000) रुपये दानस्वरूप देंगे। भारत सरकार ने **मङ्गलायतन** को किसी भी रूप में दी जानेवाली प्रत्येक दानराशि पर, आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्रदान की है। आप इस महान कार्य में सहभागिता देकर, स्व-पर का उपकार करें।

आप इसमें स्वयं एवं अपने परिवारीजन, इष्टमित्र आदि को भी सदस्य बनने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। साथ ही **तीर्थधाम मङ्गलायतन** द्वारा संचालित होनेवाले कार्यक्रमों में, आपकी सहभागिता, हमें प्राप्त होगी।

आप यथाशीघ्र पधारकर यहाँ विराजित जिनबिम्बों के दर्शन एवं यहाँ वीतरागमयी वातावरण का लाभ लेवें - ऐसी हमारी भावना है।

हार्दिक धन्यवाद एवं जयजिनेन्द्र सहित

अजितप्रसाद जैन	**स्वप्निल जैन**	**सुधीर शास्त्री**
अध्यक्ष	महामन्त्री	निदेशक

सम्पर्क-सूत्र : 9756633800 (सुधीर शास्त्री)
email - info@mangalayatan.com

मङ्गल वात्सल्य-निधि

सदस्यता फार्म

नाम .....

पता .....

..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

मैं **'मङ्गल वात्सल्य-निधि'** योजना की आजीवन सदस्यता स्वीकार करता हूँ, मैं प्रतिमाह एक हजार रुपये **'मङ्गल वात्सल्य-निधि'** में आजीवन जमा करवाता रहूँगा।

हस्ताक्षर

यह राशि आप प्रतिमाह दिनांक पहली से दस तक निम्न प्रकार से हमें भेज सकते हैं-

1. बैंक द्वारा

NAME	:	SHRI ADINATH KUNDKUND KAHAN DIGAMBER JAIN TRUST, ALIGARH
BANK NAME	:	PUNJAB NATIONAL BANK
BRANCH	:	RAILWAY ROAD, ALIGARH
A/C. NO.	:	1825000100065332
RTGS/NEFTS IFS CODE	:	PUNB0001000
PAN NO.	:	AABTA0995P

2. Online : http://www.mangalayatan.com/online-donation/
3. ECS : Auto Debit Form के माध्यम से।

वैराग्य समाचार

तिगोड़ा (सागर) : श्री चौधरी बाबूलालजी का शान्तपरिणामों से देहपरिवर्तन हो गया है। आप पण्डित रतनचन्द शास्त्री के पिताश्री तथा नन्दीश्वर विद्यापीठ खनियांधाना के प्राचार्य पण्डित दीपक शास्त्री के ताऊ थे।

खतौली : श्रीमती मीना जैन का शान्तपरिणामों से देहपरिवर्तन हो गया है। आप श्री कल्पेन्द्र जैन, खतौली की माताश्री थीं।

दलपतपुर (सागर) : श्रीमती सुमन जैन धर्मपत्नी पण्डित सन्तोष चौधरी का शान्तपरिणामों से देहपरिवर्तन हो गया है। आप डॉ. सचिन्द्र जैन, मङ्गलायतन एवं पण्डित सौरभ शास्त्री की मामी थीं।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही मोक्षमार्ग प्रशस्त कर अभ्युदय को प्राप्त हों-ऐसी भावना मङ्गलायतन परिवार व्यक्त करता है।

दशलक्षण पर्व के अवसर पर सासनी जिनमन्दिर में
स्वाध्याय कराते पण्डित सुधीर शास्त्री, मङ्गलायतन

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में दशलक्षण पर्व की झलकियाँ

Regn. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2018-20

काल और क्षेत्र से अप्रभावित मुनिदशा

प्रश्न - यह तो चौथे काल के साधुओं की बात है ?

उत्तर - अरे यह तो पञ्चम काल के साधु की बात है। पञ्चम काल में साधुपना कैसा होता है ? वह यहाँ बतला रहे हैं। चौथे काल के हों अथवा पञ्चम काल के हों, साधु के स्वरूप में कोई अन्तर नहीं आता। 'एक होय तिन काल में परमारथ का पन्थ' तीनों काल मुनिपना एक ही प्रकार का होता है। जैसे, वस्तु का मूल स्वरूप तीनों काल पवित्र और शुद्ध एक ही प्रकार का होता है; उसी प्रकार उसके अवलम्बन से प्रगट होनेवाली पवित्रता और शुद्धता/मुनिदशा भी तीनों काल एक प्रकार ही होती है। शुभयोग से, शुभभाव से वह पवित्र दशा प्रगट नहीं होती। शुभराग तो निमित्त के आश्रय से प्रगट होता है, वह कहीं आत्मा का स्वरूप नहीं है। *(वचनामृत प्रवचन, भाग 4, पृष्ठ 196)*

पं. सं. : DELBIL/2001/4685
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पवन जैन द्वारा **मङ्गलायतन** मुद्रणालय, आगरा रोड, अलीगढ़-202001 छपवाकर, 'विमलांचल', हरिनगर, अलीगढ़-202001 से प्रकाशित। सम्पादक : डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, मङ्गलायतन।

मङ्गलायतन
श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हरिनगर, आगरारोड, अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)
Shri Adinath-Kundkund-Kahan Digamber Jain Trust
Harinagar, Agra Road, Aligarh-202001 (U.P.)
Ph. : 9997996346, 2410010/10; Fax : 2410019/22
info@mangalayatan.com www.mangalayatan.com